Result Mitra
दैनिक जागरण
The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE
दैनिक भास्कर
THE HINDU
जनसत्ता
Daily
CURRENT
AFFAIRS
IAS/PCS
अब होगी करंट अफेयर्स की राह आसान
28 February

Quote of the Day

Result Mitra

बस हिम्मत रखो जीवन की शुरुआत
कहीं से भी की जा सकती है।
दुनिया की कोई परेशानी आपके
साहस से बड़ी नहीं है।

Result Mitra

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

UPSC Syllabus Relavanace

- UPSC Mains Paper 1

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

मध्य प्रदेश: गिद्ध संरक्षण में बड़ी उपलब्धि

- मध्य प्रदेश ने वन्यजीव संरक्षण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया है और भारत में गिद्धों की सबसे बड़ी आबादी वाला राज्य बन गया है।
- 2025 की पहली चरण की जनगणना के अनुसार, राज्य में कुल 12,981 गिद्ध पाए गए, जो 2024 में 10,845 और 2019 में 8,397 थे।

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

मध्य प्रदेश: गिद्ध संरक्षण में बड़ी उपलब्धि

- यह वृद्धि राज्य की प्रभावी संरक्षण नीतियों का परिणाम है। 2016 में शुरू हुई यह जनगणना गिद्धों की आबादी पर नज़र रखने और उनके संरक्षण में अहम भूमिका निभा रही है।

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

गिद्ध जनगणना प्रक्रिया

- मध्य प्रदेश वन विभाग 2016 से व्यवस्थित रूप से गिद्धों की जनगणना कर रहा है। 2025 में यह सर्वेक्षण दो चरणों में हुआ:
- पहला चरण: 17 से 19 फरवरी 2025
- दूसरा चरण: 29 अप्रैल 2025

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

गिद्ध जनगणना प्रक्रिया

- यह सर्वेक्षण 16 सर्कल, 64 डिवीजन और 9 संरक्षित क्षेत्रों (राष्ट्रीय उद्यान, बाघ अभयारण्य और वन्यजीव अभयारण्य) में किया गया। इससे सटीक आंकड़े एकत्र करने और संरक्षण प्रयासों को बेहतर बनाने में मदद मिलती है।

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

मध्य प्रदेश में प्रमुख गिद्ध प्रजातियां

राज्य में भारत में मौजूद 9 गिद्ध प्रजातियों में से 7 पाई जाती हैं:

स्थायी प्रजातियां

1. भारतीय लंबी चोंच वाला गिद्ध
2. सफेद पीठ वाला गिद्ध
3. मिस्री गिद्ध
4. लाल सिर वाला गिद्ध

प्रवासी प्रजातियां

5. हिमालयी ग्रिफॉन
6. यूरेशियन ग्रिफॉन
7. सिनीरियस गिद्ध

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

गिद्धों की संख्या में गिरावट और पुनरुद्धार

गिरावट का कारण:

- पिछले दशकों में गिद्धों की आबादी में भारी गिरावट आई।
- मुख्य कारण डाइक्लोफेनाक नामक पशु चिकित्सा दवा थी, जिससे इलाज किए गए पशुओं के शव खाने पर गिद्धों की गुर्दे की विफलता हो जाती थी।

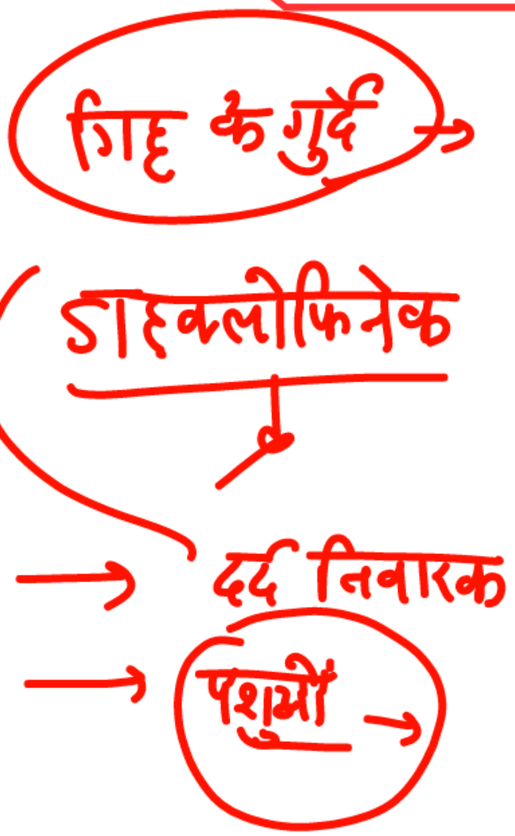

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

गिद्धों की संख्या में गिरावट और पुनरुद्धार

संरक्षण प्रयास:

- 2006 में डाइक्लोफेनाक पर प्रतिबंध।
- गिद्धों के आवास संरक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों से उनकी संख्या में वृद्धि हुई।

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

गिद्धों का पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान

- गिद्ध शवों का निपटान करके बीमारियों के प्रसार को रोकते हैं।
- पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं।
- मध्य प्रदेश में गिद्धों की बढ़ती संख्या संरक्षण की सफलता को दर्शाती है और इनके सतत संरक्षण की आवश्यकता को मजबूत करती है।

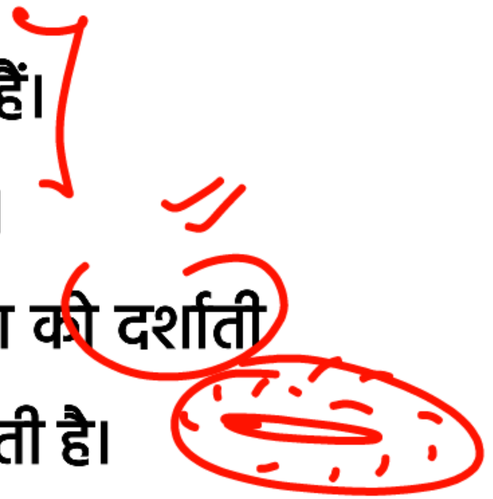

रतन टाटा
↓
पारसी समुदाय
↓

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

मुख्य तथ्य सारणी	
मुख्य बिंदु	**विवरण**
क्यों चर्चा में?	❑ मध्य प्रदेश भारत में सबसे अधिक गिद्धों की आबादी वाला राज्य बना, 2025 में संख्या 12,981 तक पहुंची।
पिछले आंकड़े	❑ 2024 में 10,845 और 2019 में 8,397 – संरक्षण प्रयासों के कारण लगातार वृद्धि।
जनगणना विवरण	❑ 2016 से जनगणना की जा रही है, 16 सर्कल, 64 डिवीजन, 9 संरक्षित क्षेत्रों को कवर करती है।

मध्यप्रदेश फिर से बना गिद्ध स्टेट

मुख्य तथ्य सारणी	
मुख्य बिंदु	**विवरण**
गिद्ध प्रजातियां	❑ भारत में पाई जाने वाली 9 में से 7 गिद्ध प्रजातियां यहाँ पाई जाती हैं, जिनमें स्थायी और प्रवासी गिद्ध शामिल हैं।
गिद्धों की गिरावट का कारण	❑ डाइक्लोफेनाक नामक पशु चिकित्सा दवा का उपयोग, जिससे गिद्धों में गुर्दा विफलता हुई।
संरक्षण उपाय	❑ डाइक्लोफेनाक प्रतिबंध (2006), आवास संरक्षण और संरक्षण कार्यक्रमों से आबादी में वृद्धि।
पारिस्थितिक भूमिका	❑ गिद्ध शवों का निपटान करके रोगों के प्रसार को रोकते हैं, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बना रहता है।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: मध्यप्रदेश में गिद्धों की संख्या में वृद्धि के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. मध्यप्रदेश में गिद्धों की जनगणना 2016 से की जा रही है।
2. डाइक्लोफेनाक नामक पशु चिकित्सा दवा गिद्धों की जनसंख्या में गिरावट का एक प्रमुख कारण था।
3. राज्य में गिद्धों की सभी 9 ज्ञात प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3

Result Mitra

फ्रेडरिक मर्ज़: जर्मनी के नए चांसलर

UPSC Syllabus Relavanace

- UPSC Mains Paper 2

फ्रेडरिक मर्ज़: जर्मनी के नए चांसलर

- हालिया आम चुनावों में क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (CDU) और क्रिश्चियन सोशल यूनियन (CSU) गठबंधन ने 28.5% वोट प्राप्त कर जीत दर्ज की।
- इस सफलता के साथ, फ्रेडरिक मर्ज़ जर्मनी के अगले चांसलर बनने के लिए तैयार हैं।

फ्रेडरिक मर्ज़: जर्मनी के नए चांसलर

व्यक्तिगत पृष्ठभूमि और राजनीतिक सफर

- जन्म: 11 नवंबर 1955, ब्रिलोन, जर्मनी
- शिक्षा: 1976 में कानून की पढ़ाई शुरू की

राजनीतिक करियर:

- 1989: यूरोपीय संसद के सदस्य बने
- 1994: जर्मन संघीय संसद (बुंडेस्टाग) में प्रवेश
- 2000: CDU के संसदीय नेता बने
- 2002: एंजेला मर्केल को यह पद सौंपा
- 2009: राजनीति से संन्यास लिया
- 2018: राजनीति में वापसी
- 2022: CDU के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने

फ्रेडरिक मर्ज़: जर्मनी के नए चांसलर

चुनाव परिणाम और अन्य दलों का प्रदर्शन

- दक्षिणपंथी पार्टी अल्टरनेटिव फॉर जर्मनी (AfD) ने 20.7% वोट हासिल कर दूसरा स्थान प्राप्त किया।
- यह AfD के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक बढ़त मानी जा रही है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाएँ

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मर्ज़ को बधाई देते हुए कहा कि "जर्मनी के लोग अब बिना किसी एजेंडे से थक चुके हैं।"

फ्रेडरिक मर्ज़: जर्मनी के नए चांसलर

चुनाव के प्रमुख मुद्दे

- आर्थिक स्थिरता
- प्रवासन नियंत्रण
- यूक्रेन संकट
- यूरोप-अमेरिका संबंधों को लेकर अनिश्चितता

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: फ्रेडरिक मर्ज़ के जर्मनी के चांसलर बनने के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. फ्रेडरिक मर्ज़ क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (CDU) के सदस्य हैं।

2. जर्मनी में हुए हालिया चुनावों में अल्टरनेटिव फॉर जर्मनी (AfD) पार्टी को 28.5% मत मिले।

3. मर्ज़ 2018 में पहली बार राजनीति में आए थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल 1

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 2

(D) 1, 2 और 3

Result Mitra

भारतीय कृषि में AI क्रांति

UPSC Syllabus Relavanace

- UPSC Mains Paper 3

भारतीय कृषि में AI क्रांति

चर्चा में क्यों?

- माइक्रोसॉफ्ट के चेयरमैन सत्य नडेला ने हाल ही में महाराष्ट्र के बारामती में प्रोजेक्ट फार्म वाइब्स (PFV) के माध्यम से कृषि में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के परिवर्तनकारी प्रभाव पर प्रकाश डाला, जिससे संसाधनों की खपत कम होने के साथ-साथ फसल की उपज में 40% की वृद्धि हुई है।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

प्रोजेक्ट फार्म वाइब्स क्या है?

परिचय:

- प्रोजेक्ट फार्म वाइब्स, जिसे माइक्रोसॉफ्ट रिसर्च द्वारा कृषि विकास ट्रस्ट, बारामती (महाराष्ट्र) के साथ मिलकर विकसित किया गया है, कृषि-केंद्रित प्रौद्योगिकियों का एक ओपन-सोर्स AI सूट है, जो डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि के साथ कृषि को बदल रहा है, शोधकर्त्ताओं और किसानों को सशक्त बना रहा है।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

प्रयुक्त प्रौद्योगिकियाँ:

- **कृषि के लिये एज़्योर (Azure) डेटा प्रबंधक:** क्षेत्र की स्थितियों के समग्र दृश्य के लिये उपग्रह, मौसम और सेंसर डेटा को एकत्रित करता है।
- **फार्म वाइब्स.AI:** परिशुद्ध कृषि अनुशंसाओं के लिये मृदा की नमी, तापमान, आर्द्रता और pH का विश्लेषण करने के लिये AI का उपयोग करता है।
- **एग्रीपायलट.AI:** सतत् कृषि के लिये वास्तविक समय, कार्यवाही योग्य जानकारी प्रदान करता है और स्थानीय भाषाओं में व्यक्तिगत सिफारिशें तैयार करता है।

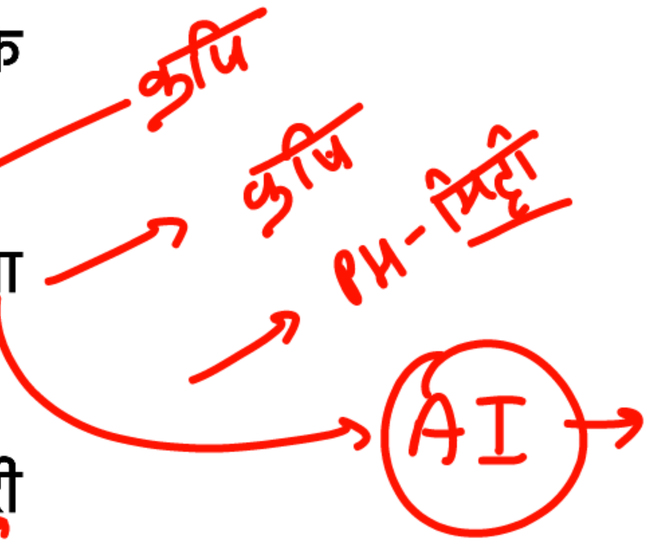

भारतीय कृषि में AI क्रांति

Result Mitra
RESULT MITRA

प्रभाव:

- फसल उत्पादन में 40% की वृद्धि, तथा अधिक स्वस्थ एवं लचीली फसलें।
- सटीक, AI-निर्देशित स्पॉट निषेचन के माध्यम से उर्वरक लागत में 25% की कमी।
- 50% कम जल खपत, सतत् सिंचाई को बढ़ावा।
- फसल-उपरांत अपव्यय में 12% की कमी, लाभप्रदता में सुधार।
- रासायनिक अपवाह, मृदा अपरदन, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और वनों की कटाई में कमी आई, जिससे पर्यावरणीय लाभ हुआ।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

AI भारतीय कृषि में किस प्रकार क्रांति ला रहा है?

स्मार्ट सिंचाई:

- भारतीय कृषि में जल की कमी एक बड़ी चुनौती है। AI सिंचाई कार्यक्रम को अनुकूलित करने के लिये मृदा नमी और जलवायु विश्लेषण के माध्यम से इस मुद्दे को संबोधित कर रहा है।
- "पर ड्रॉप मोर क्रॉप" योजना के अंतर्गत AI-एकीकृत ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली, जल दक्षता में सुधार करती है।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

AI भारतीय कृषि में किस प्रकार क्रांति ला रहा है?

स्मार्ट सिंचाई:

- ICAR द्वारा विकसित IoT-आधारित सिंचाई समाधान, जो वास्तविक समय क्षेत्र की स्थितियों के आधार पर जल आपूर्ति को स्वचालित करता है, जिससे अपव्यय कम होता है।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

AI भारतीय कृषि में किस प्रकार क्रांति ला रहा है?

कीट एवं खरपतवार नियंत्रण:

- राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली, जो कीटों की गतिविधि पर नजर रखने और वास्तविक समय पर अलर्ट प्रदान करने के लिये AI का लाभ उठाती है।
- स्वचालित खरपतवार का पता लगाना, जहाँ AI-संचालित कंप्यूटर दृष्टि फसलों से खरपतवारों को पृथक करती है और केवल आवश्यक होने पर ही खरपतवारनाशकों का प्रयोग करती है, जिससे रसायनों का उपयोग कम हो जाता है।

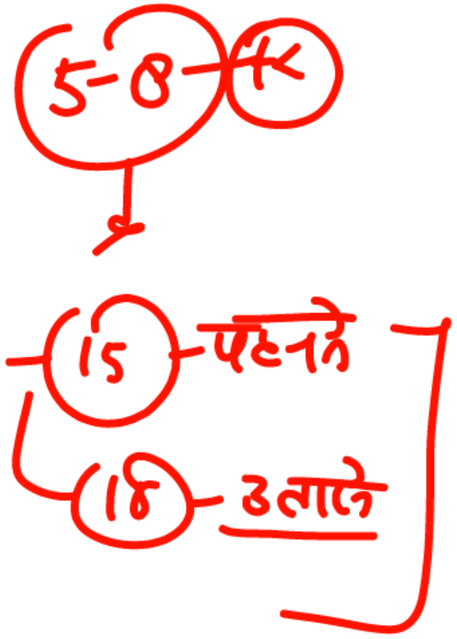

भारतीय कृषि में AI क्रांति

AI भारतीय कृषि में किस प्रकार क्रांति ला रहा है?

कृषि में AI का आर्थिक प्रभाव:

- कृषि बाज़ार में वैश्विक कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मूल्य वर्ष 2023 में 1.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था और वर्ष 2028 तक 23.1% की CAGR के साथ इसके 4.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर पहुँचने का अनुमान है, जो परिशुद्ध कृषि, ड्रोन एनालिटिक्स और श्रम प्रबंधन में प्रगति से प्रेरित होगा।
- किसान ई-मित्र, एक AI-संचालित चैटबॉट है जो पीएम किसान सम्मान निधि योजना के बारे में किसानों के प्रश्नों में सहायता करता है।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

कृषि क्षेत्र में AI को अपनाने में क्या चुनौतियाँ हैं?

- **जागरूकता का अभाव:** अनेक किसानों, विशेष रूप से ग्रामीण भारत में, AI-आधारित साधनों का उपयोग करने के लिये डिजिटल साक्षरता का अभाव है, जो बृहद स्तर पर इस प्रौद्योगिकी के अंगीकरण में बाधा उत्पन्न करता है।
- **उच्च कार्यान्वयन लागत:** ड्रोन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) सेंसर और स्वचालित सिंचाई प्रणाली जैसे AI समाधानों के लिये महत्त्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

कृषि क्षेत्र में AI को अपनाने में क्या चुनौतियाँ हैं?

- लघु और सीमांत किसान, जो भारत के कृषक समुदाय में 85% का हिस्सा हैं, सामर्थ्य के अभाव में संघर्ष करते हैं।
- बुनियादी ढाँचे का अभाव: ग्रामीण क्षेत्रों में अस्थिर इंटरनेट कनेक्टिविटी से AI-संचालित प्लेटफॉर्मों तक पहुँच बाधित होती है।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

कृषि क्षेत्र में AI को अपनाने में क्या चुनौतियाँ हैं?

- देश के 5,97618 आवासित गाँवों में से 25067 गाँवों में मोबाइल कनेक्टिविटी और इंटरनेट की सुविधा नहीं है।
- डेटा की उपलब्धता और गुणवत्ता: सटीक पूर्वानुमान के लिये AI वास्तविक समय और ऐतिहासिक डेटा पर निर्भर करता है। अपूर्ण या गलत कृषि डेटा AI की प्रभावशीलता को सीमित करता है।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

कृषि क्षेत्र में AI को अपनाने में क्या चुनौतियाँ हैं?

- **सीमित अनुकूलन:** अधिकांश AI मॉडल भारत की विविध कृषि-जलवायु स्थितियों के अनुरूप नहीं हैं।
- क्षेत्र-विशिष्ट AI समाधान विकसित करने के लिये और अधिक शोध की आवश्यकता है।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

आगे की राह

- **डेटा फ्रेमवर्क:** AgriStack पहल और भारत डिजिटल इकोसिस्टम फॉर एग्रीकल्चर (IDEA) का उपयोग कृषि डेटा प्रबंधन के लिये डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में किया जा सकता है, जिससे निर्बाध डेटा एकीकरण के माध्यम से सटीक पूर्वानुमान संभव हो सकेगा।
- भारतीय कृषि के लिये क्षेत्र-विशिष्ट AI समाधान विकसित करने हेतु राष्ट्रीय AI उत्कृष्टता केंद्रों का उपयोग किया जाना चाहिये।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

आगे की राह

- **डिजिटल अवसंरचना:** प्रधानमंत्री वाई-फाई एक्सेस नेटवर्क इंटरफेस (पीएम-वाणी) और भारतनेट परियोजना के अंतर्गत सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट ग्रामीण कनेक्टिविटी को बढ़ा सकते हैं, जिससे किसानों को AI-संचालित प्लेटफॉर्मों तक पहुँच प्राप्त हो सकेगी।

भारतीय कृषि में AI क्रांति

आगे की राह

- **कौशल और जागरूकता:** राष्ट्रीय कृषि ई-गवर्नेंस योजना (NeGPA) का उद्देश्य किसानों को AI अनुप्रयोगों के बारे में शिक्षित करना है, जबकि फ्यूचर स्किल्स प्राइम कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि के लिये AI और उभरती प्रौद्योगिकियों में पेशेवरों को पुनः कौशल प्रदान किया जाता है।
- **वित्तीय सहायता:** कृषि में नवाचार को बढ़ावा देते हुए डिजिटल कृषि मिशन (2021-2025) के तहत, कृषि-तकनीक स्टार्टअप और किसान सहकारी समितियों को रियायती ऋण प्रदान किया जाना चाहिये।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: भारतीय कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उपयोग से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. प्रोजेक्ट फार्म वाइब्स (PFV) माइक्रोसॉफ्ट रिसर्च और कृषि विकास ट्रस्ट, बारामती द्वारा विकसित एक ओपन-सोर्स AI प्लेटफॉर्म है।
2. AI-संचालित स्मार्ट सिंचाई प्रणालियों से उर्वरक लागत में 50% की कमी आई है।
3. राष्ट्रीय कीट निगरानी प्रणाली, कीट गतिविधियों पर नजर रखने और किसानों को अलर्ट देने के लिए AI का उपयोग करती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

Result Mitra

सरस आजीविका मेला 2025

UPSC Syllabus Relavanace

- UPSC Mains Paper 1

सरस आजीविका मेला 2025

सरस आजीविका मेला 2025: ग्रामीण उद्यमिता का उत्सव

मुख्य उद्देश्य

- ग्रामीण कारीगरों और शिल्पकारों की आजीविका को बढ़ावा देना।
- समावेशी विकास के अवसर उपलब्ध कराना।

महत्व और योगदान

- 'वोकल फॉर लोकल' अभियान को सशक्त बनाना।
- वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' के लक्ष्य की दिशा में योगदान।

सरस आजीविका मेला 2025

सरस आजीविका मेला 2025: ग्रामीण उद्यमिता का उत्सव

संस्करण और आयोजन

- संस्करण: पाँचवाँ
- आयोजक: ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान के सहयोग से।

वर्ष 2025 की थीम

- "लखपति दीदी की निर्यात क्षमता का विकास"
- 400+ लखपति दीदी अपने उत्पादों के साथ मेले में भाग लेंगी।

सरस आजीविका मेला 2025

प्रदर्शित किए जाने वाले प्रमुख राज्यीय उत्पाद

- आंध्र प्रदेश: कलमकारी
- छत्तीसगढ़: कोसा साड़ी
- गुजरात: भारत गुंथन एवं पैचवर्क
- मध्य प्रदेश: चंदेरी एवं बाग प्रिंट
- मेघालय: एरी उत्पाद
- ओडिशा: टसर एवं बंधा
- उत्तराखंड: पश्मीना
- पश्चिम बंगाल: कांथा, बाटिक प्रिंट, तांत एवं बालूचरी

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: सरस आजीविका मेले 2025 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इस मेले का आयोजन ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा किया जाता है।

2. वर्ष 2025 की थीम "लखपति दीदी की निर्यात क्षमता का विकास" है।

3. यह भारत सरकार के 'स्टार्टअप इंडिया' मिशन का हिस्सा है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3

Result Mitra

ब्लैक प्लास्टिक जीवन के लिए हानिकारक

UPSC Syllabus Relavanace

- UPSC Mains Paper 3

ब्लैक प्लास्टिक जीवन के लिए हानिकारक

ब्लैक प्लास्टिक और उससे जुड़े संभावित खतरे

पृष्ठभूमि

- रिसाइकिल किए गए ब्लैक प्लास्टिक को लेकर किए गए एक अध्ययन में यह दावा किया गया था कि इसमें जहरीले अग्निरोधी तत्व होते हैं, जो भोजन में मिलकर स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हो सकते हैं।
- हालांकि, हालिया समीक्षा में पाया गया कि अध्ययन में एक विषैले रसायन की गणना में त्रुटि थी, जिसे बाद में सुधारना पड़ा।

ब्लैक प्लास्टिक जीवन के लिए हानिकारक

ब्लैक प्लास्टिक से संबंधित अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

- प्रकाशन: अक्टूबर 2024, केमोस्फीयर जर्नल।
- नमूना: अमेरिका में बेचे जाने वाले 203 ब्लैक प्लास्टिक उत्पादों का विश्लेषण, जिनमें शामिल थे:
  - ✓ बर्तन
  - ✓ टेकअवे कंटेनर
  - ✓ खिलौने

ब्लैक प्लास्टिक जीवन के लिए हानिकारक

ब्लैक प्लास्टिक से संबंधित अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

- अध्ययन में डेकाब्रोमोडिफेनिल ईथर (BDE-209) नामक अग्नि-रोधी रसायन की मौजूदगी दर्ज की गई, जो पर्यावरण में लंबे समय तक बना रहता है।
- यह रसायन एक दशक पहले अमेरिका में प्रतिबंधित कर दिया गया था, फिर भी ब्लैक प्लास्टिक में इसकी मात्रा पाई गई।

ब्लैक प्लास्टिक जीवन के लिए हानिकारक

ब्लैक प्लास्टिक से संबंधित अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

- EPA की तय सीमा से कम होने के बावजूद, वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी कि इन अग्निरोधी तत्वों की सुरक्षित सीमा को लेकर पर्याप्त शोध नहीं हैं, जिससे इन बर्तनों के उपयोग में सतर्कता आवश्यक है।

ब्लैक प्लास्टिक

एक परिचय

Result Mitra

ब्लैक प्लास्टिक: एक परिचय

क्या है?

- यह प्लास्टिक आमतौर पर पुराने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (टीवी, कंप्यूटर) के पुनर्चक्रण से बनाया जाता है।
- इस प्लास्टिक को गहरे रंग देने के लिए 'कार्बन ब्लैक' नामक डाई मिलाई जाती है।

ब्लैक प्लास्टिक: एक परिचय

संभावित खतरनाक तत्व:

- इलेक्ट्रॉनिक्स में ब्रोमीन, एंटीमनी, सीसा, कैडमियम, पारा जैसी भारी धातुएं होती हैं।
- अग्निरोधी रसायन इन उत्पादों में मिलाए जाते हैं ताकि आग से सुरक्षा हो सके।
- ये सभी तत्व मानव स्वास्थ्य के लिए विषाक्त माने जाते हैं और कई देशों में इन पर प्रतिबंध लगाया गया है।

Result Mitra

ब्लैक प्लास्टिक: एक परिचय

उपयोग:

- खाद्य कंटेनर, बर्तन, पैकेजिंग आदि में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है।
- लैपटॉप, टेलीविजन जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में भी इसका उपयोग होता है।

ब्लैक प्लास्टिक के संभावित दुष्प्रभाव

1. मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव

ब्लैक प्लास्टिक में मौजूद BPA और फैथलेट्स (Phthalates) जैसे रसायन अंतःस्रावी तंत्र को बाधित कर सकते हैं, जिससे:

- मोटापा
- मधुमेह
- प्रजनन संबंधित समस्याएँ हो सकती हैं।

कुछ विशिष्ट रसायनों के संपर्क में आने से बच्चों में:

- मानसिक विकास पर प्रभाव
- बौद्धिक क्षमता में कमी
- तंत्रिका तंत्र संबंधी विकार हो सकते हैं।

Result Mitra

ब्लैक प्लास्टिक के संभावित दुष्प्रभाव

2. पर्यावरणीय प्रभाव

ब्लैक प्लास्टिक को आसानी से रीसाइकिल नहीं किया जा सकता, इसलिए इसे आमतौर पर लैंडफिल या भस्मक संयंत्रों में भेजा जाता है।

जलाने पर डाइऑक्सिन और फ्यूरान जैसे जहरीले रसायन हवा में फैलते हैं, जो:

- कैंसर (कार्सिनोजेन) का खतरा बढ़ाते हैं।
- सांस संबंधी समस्याओं को जन्म दे सकते हैं।

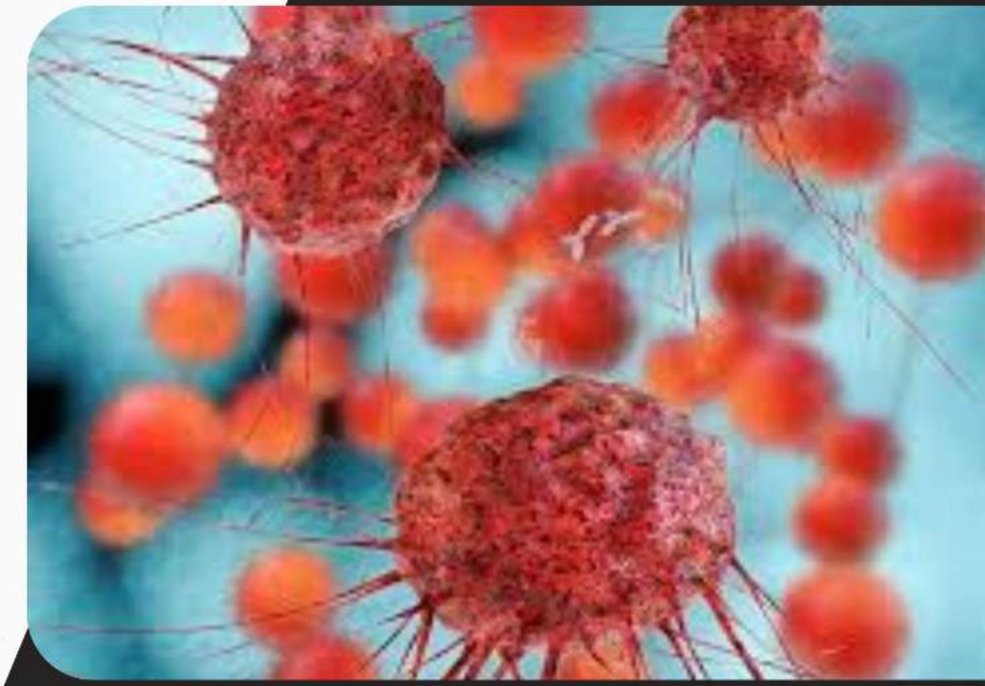

ब्लैक प्लास्टिक के संभावित दुष्प्रभाव

3. माइक्रोप्लास्टिक संदूषण

ब्लैक प्लास्टिक खाद्य, पानी और वायु में माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा बढ़ाता है।

इससे मानव शरीर में:

- ✓ सूजन
- ✓ ऑक्सीडेटिव तनाव
- ✓ कोशिकीय क्षति हो सकती है।

ब्लैक प्लास्टिक के संभावित दुष्प्रभाव

निष्कर्ष और समाधान

- खाद्य भंडारण और पकाने के लिए ब्लैक प्लास्टिक के बजाय कांच या स्टेनलेस स्टील जैसे सुरक्षित विकल्पों का उपयोग करना चाहिए।
- ब्लैक प्लास्टिक में मौजूद रासायनिक तत्व और पर्यावरणीय प्रभाव गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकते हैं, इसलिए इसके उपयोग को कम करने की दिशा में कदम उठाना आवश्यक है।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: ब्लैक प्लास्टिक से संबंधित स्वास्थ्य और पर्यावरणीय प्रभावों को लेकर निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. ब्लैक प्लास्टिक आमतौर पर पुनर्चक्रित इलेक्ट्रॉनिक कचरे से बनाया जाता है।

2. इसमें डेकाब्रोमोडिफेनिल ईथर (BDE-209) नामक अग्निरोधी रसायन होता है, जिसे अमेरिका में प्रतिबंधित किया गया था।

3. ब्लैक प्लास्टिक को आसानी से पुनर्चक्रित किया जा सकता है, जिससे यह पर्यावरण के लिए सुरक्षित है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3

Result Mitra

हैराथ पोस्ते त्यौहार

UPSC Syllabus Relavanace

- UPSC Mains Paper 1

हेराथ पोश्ते: पवित्र पर्व पर प्रधानमंत्री की शुभकामनाएँ

समाचार में क्यों?

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कश्मीरी पंडितों के सबसे बड़े त्योहार, हेराथ, की शुभकामनाएँ दीं।
- उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'X' पर पोस्ट किया:
- "हेराथ पोश्ते! यह त्योहार कश्मीरी पंडित बहनों और भाइयों की जीवंत संस्कृति से जुड़ा हुआ है। इस शुभ अवसर पर, मैं सभी के लिए सद्भाव, अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना करता हूँ।"

हैराथ पोस्ते त्यौहार

हेराथ: एक महत्वपूर्ण पर्व

- अन्य नाम: इसे 'हर रात्रि' या 'शिवरात्रि' के रूप में भी जाना जाता है।

धार्मिक महत्व:

- यह भगवान शिव और माता पार्वती के पवित्र मिलन का प्रतीक है।

तिथि:

- फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को मनाया जाता है।
- यह आमतौर पर फरवरी और मार्च के बीच पड़ता है।

हैराथ पोस्ते त्यौहार

संस्कृति से जुड़ी परंपराएँ

विस्थापन के बावजूद बनी परंपरा:

- 1990 के कश्मीरी पंडितों के पलायन के बाद भी इस त्योहार को पूरी श्रद्धा से मनाया जाता है।
- यह पर्व उनकी सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक आस्था को बनाए रखने का प्रतीक है।

पूजा और अनुष्ठान:

- इस दिन शिव-पार्वती और अन्य देवी-देवताओं की पूजा की जाती है।
- परिवार के सदस्य व्रत रखते हैं और पारंपरिक व्यंजन का भोग लगाया जाता है।

हैराथ पोस्ते त्यौहार

हेराथ: सिर्फ पर्व नहीं, पहचान का प्रतीक

- यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि कश्मीरी पंडितों की परंपरा, संस्कृति और धार्मिक अस्मिता का प्रतीक है।

यह पर्व:

- शिव भक्ति और आध्यात्मिकता को दर्शाता है।
- सामुदायिक एकता और अटूट आस्था को मजबूत करता है।
- भारत और विदेशों में बसे कश्मीरी पंडित इसे पूरी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाते हैं।

हैराथ पोस्ते त्यौहार

खीर भवानी मंदिर: आस्था का केंद्र

- कश्मीरी पंडितों की कुल देवी का प्रसिद्ध मंदिर खीर भवानी मंदिर है।
- यह मंदिर ज्येष्ठ माह की अष्टमी को होने वाले विशाल मेले के लिए प्रसिद्ध है।
- **खास परंपरा:** यहाँ देवी दुर्गा को खीर का भोग अर्पित किया जाता है, जिससे इसका नाम "खीर भवानी" पड़ा।
- **अन्य नाम:** इसे महारज्ञा देवी मंदिर, राज्ञा देवी मंदिर, रजनी देवी मंदिर और राज्ञा भवानी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

हैराथ पोस्ते त्यौहार

रहस्यमयी जलकुंड: संकट का पूर्व संकेत?

- इस मंदिर में स्थित जलकुंड को चमत्कारी माना जाता है।
- मान्यता है कि जब भी कश्मीर में कोई बड़ा संकट आने वाला होता है, तो इस कुंड का पानी काला पड़ जाता है।
- **उदाहरण:** 2014 की कश्मीर बाढ़ से पहले इस कुंड का पानी काला हो गया था।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: हेराथ पोस्ते त्यौहार से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह पर्व भगवान शिव और माता पार्वती के पवित्र मिलन का प्रतीक है।
2. इस पर्व को ज्येष्ठ मास की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है।
3. यह कश्मीरी पंडित समुदाय का एक प्रमुख त्योहार है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 2

(D) 1, 2 और 3

Result Mitra

Thank You